



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 347]
No. 347]

नई दिल्ली, बुधवार, अक्टूबर 21, 1981/आश्विन 29, 1903
NEW DELHI, WEDNESDAY, OCTOBER 21, 1981/ASVINA 29, 1903

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

गृह मंत्रालय
अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 अक्टूबर, 1981

सं० का० नि० 564 (अ).— राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्न-
लिखित उद्घोषणा सर्वसाधारण के सूचनायें प्रकाशित की जा रही है :-

अतः मुझे, भारत के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी को केरल राज्य के राज्यपाल से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई है और इस रिपोर्ट तथा मुझे प्राप्त अन्य सूचना पर विचार करने के बाद मेरा समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें राज्य का शासन भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् "संविधान" कहा गया है) के उपबंधों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है —

अतः अब मे, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का तथा उम निम्न मुझे समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं —

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कृत्य और इस राज्य के राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोज्य सभी शक्तियाँ भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं संभालता हूँ ;

(ख) घोषित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मंडल की शक्तियाँ संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोज्य होंगी ; और

(ग) निम्नलिखित अनुषंगिक और पारिणामिक उपबंध करता हूँ जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए मुझे आवश्यक या वांछनीय प्रतीत होते हैं, अर्थात् :-

(i) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खंड (क) के आधार पर मेरे द्वारा संभाले गए कृत्यों और शक्तियों का प्रयोग करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझूँ उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करना विधिपूर्ण होगा ;

(ii) उक्त राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित उप-बंधों के प्रवर्तन को एतद्वारा निलंबित किया जाता है अर्थात् अनुच्छेद 3 के परन्तुक का उतना भाग जितने का संबंध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के विधान मंडल को निदेश करने से है ;

अनुच्छेद (5) के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

अनुच्छेद 163 और 164 ;

अनुच्छेद 166 के खंड (3) का उतना भाग जितने के संबंध राज्य सरकार के कार्य के मंत्रियों के बीच बदवारे से है ;

अनुच्छेद 167 और 169 ;
अनुच्छेद 174 का खंड (1) अनुच्छेद 175, 176 और 177 ;
अनुच्छेद 179 का खंड (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक ;

अनुच्छेद 181, 188, 189, 193, 194, 196 और 198 ;
अनुच्छेद 194 का खंड (3) और खंड (4) ;
अनुच्छेद 208 से 211 (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ;
अनुच्छेद 213 के खंड (1) का परन्तुक और खंड (3) का परन्तुक ; और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उनका भाग जितने का संबंध ज्ञापन सहित रिपोर्ट को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

- (iii) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निदेश का अर्थ उस राज्य के संबंध में राष्ट्रपति के प्रति निदेश लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी निदेश का, जहां तक उसका संबंध उसके कृत्यों और उसकी शक्तियों से है, अर्थ, जब तक कि सदस्य द्वारा अन्यथा अपेक्षित न हो, संसद के प्रति निदेश लगाया जाएगा और, विशेषतया अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधान मंडल या उसके सदस्यों के प्रति निदेशों का अर्थ, क्रमशः राष्ट्रपति और संसद या उसके सदस्यों के प्रति निदेश लगाया जाएगा ;

परन्तु इसमें की कोर्ट बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपबंधों पर प्रभाव नहीं डालेगी और न राष्ट्रपति को उस खंड के उपबंध (1) के अधीन उस सीमा तक जहां तक वह दीक समझें उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करने से निवारित करेगी ;

- (iv) संविधान में राज्य के विधान मंडल के या एतद्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निदेश का ऐसा अर्थ लगाया जाएगा मानो उसने अंतर्गत इन उद्घोषणा के आधार पर संसद द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खंड (1) के उपबंध (क) और निर्वाचन तथा साधारण खंड अधिनियम, 1125 (1125 का अधिनियम VII) जैसा कि वह केरल राज्य में लागू है, में निर्दिष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मंडल की शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति निदेश है, और साधारण खंड अधिनियम, 1897 (1897 का 10) का उतना भाग जितना राज्य विधियों पर लागू है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होगा मानो यह उस राज्य के विधान मंडल का अधिनियम हो।

नई दिल्ली,

दिनांक 21 अक्टूबर, 1981

नीलम संजीव रेड्डी,

राष्ट्रपति

[सं० 5/11013/8/81-सी० एस० आर०]

एस० वरदान, अपर सचिव

नई दिल्ली.

दिनांक 21 अक्टूबर, 1981

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st October, 1981

G.S.R. 564(E).—The following Proclamation by the President is published for general information :—

Whereas, I, Neelam Sanjiva Reddy, President of India, have received a report from the Governor of the State of Kerala and after considering the report and other information received by me, I am satisfied that a situation has arisen in which the Government of that State cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution") ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all their powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

- assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State ;
- declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament ; and
- make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely—
 - in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State ;
 - the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely :—

So much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State ;

So much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India ;

articles 163 and 164 ;

so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State ;

articles 167 and 169 ; clause (1) of article 174 ; article 175 ; 176 and 177 ; clause (c) of article 179 and the first proviso thereto ;

articles 181, 188, 189, 193, 194, 196 and 198 ;

clauses (3) and (4) of article 199 ; articles 208 to 211 (both inclusive) ;

the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213 ; and

so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State ;

- (iii) any reference in the Constitution to the Governor shall, in relation to the said State, be construed as a reference to the President, and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof, shall in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, the references in article 213 to the Governor and the Legislature of the State or the House thereof,

shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively ;

Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (1) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State ;

- (iv) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution, and the Interpretation and General Clauses Act, 1125 (Act VII of 1125) as in force in the State of Kerala, and so much of General Clauses Act, 1897 (10 of 1897) as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law, as if it were an Act of the Legislature of the State.

NEW DELHI ;

The 21st October, 1981.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President

NEW DELHI ;

The 21st October, 1981.

[F. No. V/11013/8/81-CSR]
S. VARADAN, Additional Secy.

साधना

नई दिल्ली, 21 अक्टूबर, 1981

सं० का० वि० 565 (अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्न-लिखित आदेश सर्व-साधारण के सूचनायें प्रकाशित किया जा रहा है :—

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मेरे द्वारा आज अक्टूबर, 1981 के इसीसे दिनांक जारी की गई अध्यादेश के खंड

(ग) के उपखंड (1) का अनुसरण करते हुए मैं एतद्वारा निर्देश देता हूँ कि केरल राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल से निहित या उसके द्वारा प्रयोज्य सभी शक्तियाँ, जिन को राष्ट्रपति से उक्त अध्यादेश के खंड (क) के आधार पर स्वयं संभाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अध्याधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोज्य होगी।

नई दिल्ली ;

नीलम संजिव रेड्डी,

दिनांक 21 अक्टूबर, 1981.

राष्ट्रपति

[एफ० सं० 5/11013/8/81-सी० एम० आर०]

नई दिल्ली ;

एस० वरदान, अपर सचिव

दिनांक 21 अक्टूबर, 1981

ORDER

New Delhi, the 21st October, 1981

G.S.R. 565(E).—The following Order by the President is published for general information :—

In pursuance of sub-clause (1) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 21st day of October, 1981, by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Kerala and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State, under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

NEW DELHI ;

The 21st October, 1981.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

NEW DELHI ;

The 21st October, 1981.

[F. No. V/11013/8/81-CSR]
S. VARADAN, Additional Secy.

